Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

(सूरः तौबा : 72)

अनुवाद : अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से ऐसी जन्नतों का वाअदा किया है जिनके दामन में नहरें बेहती होंगी वह उनमें हमेशा रहने वाले हैं। इसी तरह बहुत पाकीज़ा घरों का भी जो दायमी जन्नतों में होंगे। जबकि अल्लाह की रज़ा सबसे बढ़ कर है। यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक 17

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15 शवाल 1445 हिज्री कमरी, 25 शहादत 1403 हिज्री शम्सी, 25 अप्रैल 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

नमाज़ में सफ़ें सीधी रखनी चाहिए

हज़रत नुमान बन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैंकि मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे तुम्हें अपनी सफ़ें सीधी रखनी चाहिए अन्यथा अल्लाह तआला तुम्हारे चेहरों और तुम्हारे दिलों में मतभेद का बीज डाल देगा।

(बुख़ारी, किताबुस सलात)

फ़र्ज़ नमाज़ के खड़े होने पर कोई नमाज़ जायज़ नहीं

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब नमाज़ खड़ी हो जाएगी तो फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा कोई और नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं।

(मुस्लिम, किताबुल् सलात)

मिस्वाक करना और उसकी फ़ज़ीलत

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मिस्वाक करना मुँह की पाकीज़गी और अल्लाह तआला की रज़ा का माध्यम है।

(निसाई, बाब अल् तरग़ीब)

★ ★ ★

यह बिल्कुल सच्ची बात है कि शब्दों की ओर देखो बोलने वाले की तरफ़ मत ख़्याल करो इस प्रकार इन्सान सच्चाई के पाने से वंचित रह सकता है और अंदर ही अंदर एक अजब द्वेष का बीज परवरिश पा जाता है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यह बिल्कुल सच्ची बात है कि कथन की तरफ़ देखो बताने वाले की तरफ़ मत ख़्याल करो। इस तरह पर इंसान सच्चाई के लेने से वंचित रह सकता है और अंदर ही अंदर एक अजब द्वेष का बीज परवरिश पा जाता है, क्योंकि अगर यह केवल सच्चाई और सदाक़त का तालिब है तो फिर दूसरों की ऐब शुमारी से इस को क्या ग़रज़।

वाअज़ अपने लिए कोई एक बात निकाल ले, परंतु तुमको उससे क्या उद्देश्य। तुम्हारा उद्देश्य असली तो तलब-ए--हक़ है। इस में कोई संदेह नहीं कि ये लोग बे मौक़ा, बेमहल, बिना जोड़ के बात शुरू कर देते हैं और नसीहत करते वक़्त कार्य की बुद्धिमत्ता समय का वर्णन नहीं करते और न उन रोगों का लिहाज़ रखते हैं जिनमें संबोधित ग्रस्त होते हैं बल्कि अपने सवाल को ही विभिन्न पैरायों में वर्णन करते हैं।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वर्णन करने के ढंग को अगर ग़ौर से देखते तो उनके वाज़ कहने का भी ढंग आ जाता। एक व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आता है और पूछता है कि सबसे बेहतर नेकी क्या है। आप उसको उत्तर देते हैं कि सख़ावत। दूसरा आकर यही सवाल करता है तो उसको उत्तर मिलता है माँ बाप की ख़िदमत। तीसरा आता है उसको उत्तर कुछ और मिलता है। प्रश्न एक ही होता है उत्तर अलग अलग। अक्सर लोगों ने यहां पहुंच कर ठोकर खाई है और ईसाइयों ने भी ऐसी हदीसों पर बड़े-बड़े एतराज़ किए हैं, परंतु कम अक्लों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन मुफ़ीद और मुबारक उत्तर के ढंग पर ग़ौर नहीं किया।

इस में रहस्य यही था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जिस किस्म का मरीज़ आता था उसके हसब-ए-हाल नुस्ख़ा शिफ़ा बतला देते थे। जिसमें उदाहरणतः कंजूसी की आदत थी उसके लिए बेहतरीन नेकी यही हो सकती थी कि इसको तर्क करे,जो माँ बाप की ख़िदमत नहीं करता था,बल्कि उनके साथ सख़्ती के साथ पेश आता था, उसको इसी किस्म की शिक्षा की ज़रूरत थी कि वह माँ बाप की सेवा करे।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 506, प्रकशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

पूर्ण ईमान वाला वही व्यक्ति कहला सकता है जो हर कठिनाई और मुसीबत में साबित-क़दम रहता है बल्कि कठिनाइयों के आने पर वह अल्लाह तआला के हुज़ूर और ज़्यादा झुक जाता और अपने अंदर पहले से भी ज़्यादा विनम्रता और सादगी उत्पन्न करता है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

ख़ुदा की ओर से आने वाला अज़ाब बिलावजह नहीं होता वह इन्सान की अपनी करतूतों की वजह से होता है। अल्लाह तआला को यही पसंद है कि इन्सान उसकी तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जा हो। बेदिली से उसकी इबादत मक़बूल नहीं होती। ख़ुशी और रंज दोनों में उसका साथ नहीं छोड़ना चाहिए अन्यथा ऐसे ईमान का कोई फ़ायदा नहीं। हक़ीक़त यह है कि वह ईमान जो इन्सान को ख़ुदा तआला के इनामात का वारिस करता और उसको मुक़र्रब और अल्लाह के इनामों का जाज़िब बनाता है वह वही ईमान होता है जो हर किस्म के शकूक-ओ-शुबहात से पाक और मासवी अल्लाह की मुहब्बत से ख़ाली हो। हमारे मुल्क में भी लोग कहा करते हैं कि दो कश्तियों में पांव रखने वाला इन्सान कभी बच नहीं सकता। अगर दोनों कश्तियां कुछ वक़्त तक इकट्ठी भी चली जाएं तब भी पानी की रोक एक न एक वक़्त उनको ज़रूर अलैहदा कर देगी और उन कश्तियों में पांव रखने वाला इन्सान ग़र्क़ हो कर रहेगा। इसी तरह ख़ुदा तआला भी उन लोगों से कोई ताल्लुक़ नहीं रखता जो मुख से तो उस के साथ अपनी मुहब्बत का दावा करते हों और अमली तौर पर रात-दिन वे दुनिया पर गिरे रहते हूँ और ख़ुदाई अहकाम को पीछे डाल रहे हों। जब तुर्कों ने बग़दाद पर हमला किया तो अठारह लाख आदमी उन्होंने क़तल कर दिया था। ऐसी तबाही और बर्बादी के वक़्त कुछ लोग एक बुज़ुर्ग के पास गए और कहने लगे कि आप दुआ करें कि अल्लाह तआला मुस्लमानों को इस तबाही से बचा ले। उन्होंने कहा मैं क्या दुआ करूँ, मैं तो जब

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

इस वक़्त क़ुरआन-ए-क़रीम का हर्बा हाथ में लो तो तुम्हारी फ़तह है, इस नूर के आगे कोई ज़ुल्मत ठहर नहीं सकेगी
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सला)

ख़ुश-क़िस्मत हैं वे जो इस अज़ीम किताब को अपना लाहे-ए-अमल बना कर इस पर अमल करें और अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत सँवार लें
सच्चाई को पकड़ लें और सच्चाई पर क़ायम हो जाएं तो फिर वे अल्लाह तआला के अपने बंदे से प्यार के सुलूक के नज़्ज़ारे भी देखेंगे

रमज़ान में रोज़े रखने या फ़र्ज़ नमाज़ें बाक़ायदगी से अदा करने या कुछ नवाफ़िल पढ़ लेने से रमज़ान का हक़ अदा नहीं होता
बल्कि क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ना और इसके अहकामात तलाश करके इस पर अमल करना भी ज़रूरी है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-क़रीम का इदराक हासिल करने और इस से फ़ैज़ पाते हुए उसकी बरकात हासिल करने के दिखाने के लिए
बेशुमार इर्शादात और तहरीरात हमारे लिए छोड़ी हैं जिनको पढ़ कर और अमल करके हम हक़ीक़ी रंग में क़ुरआन-ए-करीम से फ़ैज़ उठाने वाले हो सकते हैं

क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत की अहमियत के बारे में बता दूं कि यह भी इंतेहाई ज़रूरी चीज़ है जिसे रमज़ान में खासतौर पर प्रत्येक को करना चाहिए और कम से कम एक सीपारा रोज़ाना तिलावत करनी चाहिए ताकि रमज़ान रमज़ान में क़ुरआन-ए-क़रीम का एक दौर हो जाए

"हमारी जमात को चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शुग़ल और तदब्बुर में जान और दिल से व्यस्त हो जाएं" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"मुनकेरीन पर हमारी यह हुज्जत भी पूर्ण है कि क़ुरआन शरीफ़ जैसे मरातिब-ए-इल्मिया में आला दर्जा कमाल तक पहुँचाता है वैसा ही मरातिब-ए-अम्लिया के कमालात भी इसी के माध्यम से हैं और
आसार-ओ-अनवार क़बूलियत हज़रत अहदियत उन्हीं लोगों में ज़ाहिर होते रहे हैं और अब भी ज़ाहिर होते हैं जिन्होंने इस पाक कलाम की मुताबअत इख़तेयार की है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"सफल वही लोग होंगे जो क़ुरआन-ए-करीम के अधीन चलते हैं" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"जब तक मुस्लमानों का रुजू क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ नहीं होगा उनमें वह ईमान पैदा नहीं होगा"
यह तंदरुस्त नहीं होंगे, इज़्ज़त और उरूज इसी राह से आएगा जिस राह से पहले आया" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"याद रखो क़ुरआन-ए-क़रीम हक़ीक़ी बरकात का सरचश्मा और निजात का सच्चा माध्यम है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"निश्चित याद रखो कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से अल्लाह तआला पर ईमान लाता है और उसकी पाक किताब पर अमल करता है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत करता है तो अल्लाह तआला उसको असीमित बरकात से हिस्सा देता है, ऐसी बरकात उसे दी जाती हैं जो इस दुनिया की नेअमतों से बहुत ही बढ़कर होती हैं, उनमें से एक गुनाह की माफ़ी भी है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ें, रमज़ान में उसकी आदत डालें, फिर मुस्तक़िल ज़िंदगी का हिस्सा बनाएँ और फिर उसकी शिक्षा पर अमल करने वाले हों

"मेरा पूर्ण विश्वास है कि क़ुरआन के सिवा जो कामिल अकमल और मुकम्मल किताब है और उसकी पूरी इताअत और बग़ैर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी के निजात ही नहीं
और क़ुरआन में कमी बेशी करने वाले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत का जुआ अपनी गर्दन से उतारने वाले को काफ़िर और मुर्तद यक़ीन करता हूँ" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)
"निसन्देह यह सच बात है कि अगर कोई स्पष्ट तौबा इख़तेयार करके दस रोज़ भी क़ुरआन की मंशा के अनुसार मशग़ूली इख़तेयार करे तो अपने दिल पर-नूर नाज़िल होता देखेगा
यह विशेषताएं दीन-ए-इस्लाम की बला इमतेहान नहीं, सदहा पाक बातिनों ने इस राह से फ़ैज़ पाया है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मआरिफ़ से परिपूर्ण इर्शादात की रोशनी में क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल, मुक़ाम-ओ-मर्तबा और का वर्णन
रमज़ानुल मुबारक के दौरान रोज़ाना कम से कम एक सीपारा तिलावत-ए-क़ुरआन की तहरीक
फ़लस्तीन और सूडान में जंग के बुरे प्रभावों से बचने, अन्यथा मुस्लमान देशों के लिए साधारणतः तथा पाकिस्तान और यमन में तँगियों अहमदी असीरान-ए-राह-ए-मौला की रिहाई के लिए दुआ की तहरीक
श्रीमान डाक्टर ज़हीरुद्दीन मंसूर अहमद साहिब आफ़ अमरीका, श्रीमान हसन आबिदीन आग़ा साहिब आफ़ कैनेडा, श्रीमान उसमान हुसैन मुहम्मद ख़ैर साहिब सूडान,
श्रीमान मुहम्मद ज़हरावी साहिब आफ़ अल्-जज़ायर, श्रीमान सईद अहमद वड़ायच साहिब आफ़ रब्वाह और श्रीमान शहबाज़ गोन्दल साहिब आफ़ हॉलैंड का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 मार्च 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى
وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۡ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ

(अल् बक़रः : 186)

इस आयत का अनुवाद यह है कि रमज़ान का महीना जिस में क़ुरआन इन्सानों के लिए एक बड़ी हिदायत के तौर पर उतारा गया और ऐसे खुले निशानात के तौर पर जिन में हिदायत की तफ़सील और हक़-ओ-बातिल में अंतर कर देने वाले विषय हैं। अतः जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो उसके रोज़े रखे और जो मरीज़ हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करना दूसरे दिनों में होगा। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और चाहता है कि तुम (से) गिनती को पूरा करो और इस हिदायत के बिना पर अल्लाह की बड़ाई वर्णन करो जो उसने तुम्हें अता की और ताकि तुम शुक्र करो।

इस आयत में अल्लाह तआला ने रमज़ान के महीने की अहमियत इस हवाले से वर्णन फ़रमाई है कि इस महीने में क़ुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए एक अज़ीम हिदायत है।

अल्लाह तआला ने इस किताब में समस्त विषयों का अहाता करके, समस्त हिदायात देकर, इन्सान के अल्लाह तआला की तरफ़ बढ़ने के समस्त रास्ते दिखा कर, शैतान के समस्त रास्तों से होशयार करके, मौजूदा और आगे आने वाले विषयों की तरफ़ राहनुमाई करके, उनके ख़तरात से आगाह करके, उनसे बचने के रास्ते दिखा कर, दहरियत का मुक़ाबला करने के रास्ते दिखा कर, शिर्क से होशयार करने और इससे बचने के तरीक़े सिखा कर उद्देश्य कि समस्त उमूर जो मौजूदा हैं या पुराने ज़माने में थे या आगे होंगे इन सबको क़ुरआन-ए-मजीद में वर्णन कर के ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ में बढ़ने और हिदायत पर क़ायम रहने के समस्त रास्ते इस आख़िरी कामिल और मुकम्मल शरियत में वर्णन कर दिए हैं। अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं वह जो इस अज़ीम किताब को अपना मार्ग दर्शक बना कर इस पर अमल करें और अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत सँवार लें। सच्चाई को पकड़ लें और सच्चाई पर क़ायम हो जाएं तो फिर वह अल्लाह तआला के अपने बंदे से प्यार के सुलूक के नज़्ज़ारे भी देखेंगे।

अतः यह है रमज़ान के महीने की अहमियत कि इस महीने में अल्लाह तआला ने कामिल शरियत हम पर उतारी है और इस किताब में हमें रोज़ों की फ़र्ज़ीयत और इबादतों के तरीक़े भी सिखाएं हैं।

यदि हम केवल यह समझें कि रमज़ान के महीने की अहमियत केवल इतनी है कि इस में रोज़े फ़र्ज़ कर दिए और क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल कर दिया तो काफ़ी नहीं है जब तक कि हम इस कामिल हिदायत के बारे में इदराक हासिल नहीं करें और फिर उसे अपनी ज़िंदगी का कार्ययोजना न बनाएँ।

हम अहमदी ख़ुश-क़िस्मत हैं कि इस बात की समझ हमें आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ और मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम ने अता फ़रमाया। अतः उसके लिए हमें आप कुतुब और तफ़ासीर भी पढ़ने की ज़रूरत है ता कि इस अज़ीम कलाम और हिदायत को समझ कर हम इस पर अमल सकें।

कल यौम-ए-मसीह मौऊद भी है जिसमें हम बड़ी बाक़ायदगी से जलसे इत्यादि भी करते हैं, उसे मनाते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी और अल्लाह तआला के वादे के अनुसार मसीह मौऊद की आमद के बारे में वर्णन करते हैं और तक़ारीर करते हैं लेकिन केवल इस हद तक ईमान की तरक़्क़ी काफ़ी नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें क़ुरआन-ए-करीम के हवाले से जो ख़ज़ाना अता फ़रमाया है उसे पढ़ना और इस पर अमल करना, उसे अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाना भी इंतेहाई अहम है जिसके बग़ैर हमारा ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम ने हमें इस बात का इदराक अता फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़त-ए-रहमानियत के तहत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन-ए-करीम जैसी महान किताब उतार कर हम पर एहसान किया। अब इस से फ़ैज़ पाना और उसे अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाना हमारा काम है। अतः उसकी तरफ़ हमें ख़ास तवज्जा करनी चाहिए।

रमज़ान में रोज़े रखने या फ़र्ज़ नमाज़ें बाक़ायदगी से अदा करने या कुछ नवाफ़िल पढ़ लेने से रमज़ान का हक़ अदा नहीं होता बल्कि क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ना और उसके अहकामात तलाश करके इस पर अमल करना भी इंतेहाई ज़रूरी है।

इसके अहकामात तलाश करने की भी बहुत ज़रूरत है और यह बहुत अहम बात है और यही बात है जो हमें अल्लाह तआला की सिफ़त-ए-रहमानियत के जल्वे से सिफ़त रहीमियत के जल्वे का भी फ़ैज़ उठाने वाला बनाएगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-क़रीम का इदराक हासिल करने और इस से फ़ैज़ पाते हुए उसकी बरकात हासिल करने के रास्ते दिखाने के लिए बेशुमार इर्शादात और तहरीरात हमारे लिए छोड़ी हैं जिनको पढ़ कर और अमल करके हम हक़ीक़ी रंग में क़ुरआन-ए-करीम से फ़ैज़ उठाने वाले बन सकते हैं।

उनमें से आप चंद एक इक़तेबासात में इस वक़्त पेश भी करूँगा लेकिन इस से पहले क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत की अहमियत के बारे में बता दूं कि यह भी इंतेहाई ज़रूरी चीज़ है जिसे रमज़ान में खासतौर पर प्रत्येक को ज़रूर करना चाहिए और कम से कम एक सीपारा रोज़ाना तिलावत करनी चाहिए ताकि रमज़ान रमज़ान में क़ुरआन-ए-क़रीम का एक दौर मुकम्मल हो जाए।

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रमज़ान में नाज़िल शूदा क़ुरआन-ए-क़रीम का एक दौर मुकम्मल करवाया करते थे और आख़िरी साल में मुकम्मल क़ुरआन-ए-क़रीम का दो मर्तबा दौर मुकम्मल किया।

(सही अल् बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अल्-क़ुरआन, हदीस 4998) अतः प्रत्येक को क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत की अहमियत को अपने सामने रखना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत के हवाले से कि شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ (अल् बक़रः : 186) मे फ़रमाते हैं कि"यही एक फ़िक़रा है जिस से रमज़ान के महीने की अज़मत मालूम होती है' अर्थात ऐसा बाबरकत महीना है जिस मे यह ऐसी अज़ीम किताब नाज़िल हुई। फ़रमाते हैं कि "सूफिया ने लिखा है कि यह माह तनवीर-ए-क़लब के लिए उम्दा महीना है।" दिल को रोशन करने के लिए, अल्लाह तआला के क़रीब करने के लिए एक बड़ा उम्दा महीना है। "कसरत से इस में मुकाशफ़ात होते हैं। सलात तज़किया नफ़्स करती है और रोज़ा तजल्ली-ए-क़लब करता है। तज़किया नफ़्स से मुराद यह है कि नफ़्स-ए-अम्मारा की शहवात से दूरी हासिल हो जावे।" दिल के अंदर जो बेहूदा ख़्यालात आते रहते हैं, गुनाह के ख़्यालात आते रहते हैं उनसे दूरी पैदा हो" और तजल्ली क़लब से यह मुराद है कि कशफ़ का दरवाज़ा उस पर खुले कि ख़ुदा को देख लेवे।" ख़ुदा तआला का क़ुरब इस से हासिल होता है। फ़रमाया "अतः اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ में यही इशारा है इस में शक--ओ-शुबा कोई नहीं है।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 424 ऐडीशन 2022 ई.)

अर्थात क़ुरआन-ए-करीम पर अमल करने की बरकत से इबादतों के साथ यह मुक़ाम मिलता है। फिर क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने और समझने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं :

"मैं ने क़ुरआन के शब्द में ग़ौर किया। तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक शब्द में एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी है। वह यह है कि यही क़ुरआन अर्थात पढ़ने के लायक़ किताब है और एक ज़माना में तो और भी ज़्यादा यही पढ़ने के काबिल किताब होगी जबकि और किताबें भी पढ़ने में इसके साथ शरीक की जाएँगी।

"फ़रमाया" उस वक़्त इस्लाम की इज़्ज़त बचाने के लिए और बुतलान का इस्तीसाल करने के लिए यही एक किताब पढ़ने के काबिल होगी और अन्य किताबें पूर्णतः छोड़ देने के योग्य होंगी। (फ़रमाया) फुर्क़ान के भी यही अर्थ हैं। अर्थात यही एक किताब हक़ और बातिल में अंतर करने वाली ठहरेगी और कोई हदीस की या और कोई किताब इस हैसियत और पाया की नहीं होगी फ़रमाया".. अब सब किताबें छोड़ दो और रात-दिन किताबुल्लाह ही को पढ़ो बड़ा बेईमान है वह व्यक्ति जो क़ुरआन की तरफ़ ध्यान न करे और दूसरी किताबों पर ही दिन रात झुका रहे हमारी जमाअत को चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शुग़ल और तदब्बुर में जान और दिल से व्यस्त हो जाएं और हदीसों के शुग़ल को तर्क कर दें . .बड़े अफसोस का मुक़ाम है कि क़ुरआन-ए-क़रीम का वह इतना गौर नहीं किया जाता जो अहादीस का किया जाता है इस वक़्त क़ुरआन-ए-क़रीम का हर्बा हाथ में लो तो तुम्हारी फ़तह है

इस नूर के आगे कोई ज़ुल्मत ठहर नहीं सकेगी। मैं कहता हूँ वास्तव में यही एक हथियार है जो अब भी कारगर है और हमेशा के लिए कारगर होगा और पहले भी प्रथम युग में यही एक हर्बा था जो ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में था। मुबार बाद है और सद-हज़ार मुबारबादे हैं उस क़ौम को जो उसके इख़तेयार करने और इसी यगाना किताब को अपना माया ईमान क़रार देने में ज़रा भी झिजक और सोच में नहीं पड़ी। बड़े जोश और ख़ुशी से आगे बढ़कर इस फुर्क़ान और नूर को लब्बैक कहा।" (तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद ,भाग प्रथम, पृष्ठ 647-648)

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन का नुज़ूल ज़रूरत हक्का के वक़्त हुआ आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "वह ज़माना कि जिस में आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम अवतरित हुए हक़ीक़त में ऐसा ज़माना था कि जिसकी हालत-ए-मौजूदा जिसकी हालत अर्थात उस ज़माने की हालत, जो उस वक़्त हालत थी "एक बुज़ुर्ग और अज़ीमुल् क़द्र मुस्लेह रब्बानी और हादिए आसमानी की अशद मुहताज थी और जो जो शिक्षा दी गई वह भी वास्तव में सच्ची और ऐसी थी कि जिसकी निहायत ज़रूरत थी और उन समस्त उमूर की जामा थी कि जिस से समस्त ज़रूरतें ज़माना की पूरी होती थीं और फिर उस शिक्षा ने असर भी ऐसा कर दिखाया कि लाखों दिलों को हक़ और रास्ती की तरफ़ खींच लाए और लाखों सीनों पर ला इलाहा इलल्ला का नक़्श जमा दिया और जो नबुव्वत की इल्लत-ए-ग़ाई होती है।' जो बुनियाद होती है नबुव्वत की" अर्थात शिक्षा उसूल-ए-नजात के इस को ऐसा कमाल तक पहुंचाया जो किसी दूसरे नबी के हाथ से वह कमाल किसी ज़माना में बहम नहीं पहुंचा।" (बराहीन-ए-अहमदिया भाग दोम, रुहानी ख़ज़ायन,भाग प्रथम, पृष्ठ 112-113)

अतः यह आख़िरी शरई किताब ऐसे वक़्त में आई जब हालात उसके आने का तक़ाज़ा करते थे और फिर लाखों दिलों को पाक किया और आज तक करती चली जा रही है। अतः जिसने फ़ैज़ उठाना है इस से फ़ैज़ उठाने की कोशिश करे।

क़ुरआन-ए-करीम इलम-ओ-अमल में भी कमाल तक पहुँचाता है यह केवल बातें नहीं हैं बल्कि मुस्लमानों के, जो नेक मुस्लमान हैं आज तक के अमल इस बात के गवाह हैं। इसलिए इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "याद रहे कि अकेली अक़ल को मानने वाले जैसे इलम और मार्फ़त और यक़ीन में अपूर्ण हैं वैसा ही अमल और वफ़ादारी और सिदक़-ए-क़दम में भी अपूर्ण और क़ासिर हैं और उनकी जमाअत ने कोई ऐसा उदाहरण क़ायम नहीं किया जिस से यह सबूत मिल सके कि वह भी इन करोड़ों मुक़द्दस लोगों की तरह ख़ुदा के वफ़ादार और मक़बूल बंदे हैं कि जिनकी बरकतें ऐसी दुनिया में ज़ाहिर हुईं कि उनके वाज़ और नसीहत और दुआ और तवज्जा और तासीर-ए-सोहबत से सदहा लोग पाक रविश और बाख़ुदा हो कर ऐसे अपने मौला की तरफ़ झुक गए कि दुनिया-ओ-माफ़ीहा की कुछ परवाह नहीं रख कर और इस जहान की लज़्ज़तों और राहतों और ख़ुशियों और शोहरतों और फ़ख़रों और मालों और मुल्कों से बिल्कुल क़त-ए-नज़र करके इस सच्चाई के रास्ता पर क़दम मारा जिस पर क़दम मारने से उनमें से सैंकड़ों की जानें नष्ट हुईं।" दीन की ख़ातिर क़ुर्बानी का जज़बा उनमें पैदा हुआ। अल्लाह तआला की ख़ातिर अल्लाह से वफ़ा करने का जज़बा पैदा हो के क़ुर्बानी करने का जज़बा पैदा हुआ। फ़रमाया "जानें तलफ़ हुईं। हज़ारहा सिर काटे गए। लाखों मुक़द्दसों के ख़ून से ज़मीन तर हो गई। पर बावजूद इन सब आफ़तों के उन्होंने ऐसा सिदक़ दिखाया किआशिक़-ए--दिलदादा की तरह ज़ंजीर में बंधे हो कर हंसते रहे और दुख उठा कर ख़ुश होते रहे और विपत्तियों में पड़ कर शुक्र करते रहे और इसी एक की मुहब्बत में वतनों से बे वतन हो गए और इज़्ज़त से ज़िल्लत इख़तेयार की और आराम से मुसीबत को सिर पर ले लिया और तवंगरी से मुफ़लेसी क़बूल कर ली और विपत्तियों पै-वंद-ओ-राबिता और ख़वेशी से ग़रीबी और तन्हाई और बे कसी पर क़नाअत की और अपने ख़ून के बहाने से और अपने सिरों के कटाने से और अपनी जानों के देने से ख़ुदा की हस्ती पर मोहरें लगा दीं और कलाम-ए-इलाही की सच्ची मुता-बअत की बरकत से वह अनवार ख़ास्सा उनमें पैदा हो गए कि जो उनके ग़ैर में कभी नहीं पाए गए और ऐसे लोग न केवल पहले ज़मानों में मौजूद थेबल्कि यह बर्गुज़ीदा जमात हमेशा अहल-ए-इस्लाम में पैदा होती रहती है और हमेशा अपने नूरानी वजूद से अपने मुख़ालेफ़ीन को मुल्ज़िम-ओ-लाजवाब करती आई है। लिहाज़ा मुनकेरीन पर हमारी यह हुज्जत भी तमाम है कि क़ुरआन शरीफ़ जैसे मरातिब-ए-इल्मिया में आला दर्जा कमाल तक पहुँचाता है वैसा ही मरातिब-ए--अम्लिया के कमालात भी इसी के ज़रीया से मिलते हैं और आसार-ओ-अनवार क़बूलियत हज़रत अहदियत उन्हीं लोगों में ज़ाहिर होते रहे हैं और अब भी ज़ाहिर होते हैं जिन्हों ने इस पाक कलाम की मुताबअत इख़तेयार की है।"

अगर हक़ीक़ी रंग में उसकी पैरवी करोगे तो यह मयार हासिल होंगे।"दूसरों में हरगिज़ ज़ाहिर नहीं होते। अतः तालिब हक़ के लिए यही दलील जिसको वह बचश्म ख़ुद मुआइना कर सकता है काफ़ी है अर्थात यह कि आसमानी बरकतें और रब्बानी निशान केवल क़ुरआन शरीफ़ के कामिल ताबईन में पाए जाते हैं। निशानात अगर देखने हैं तो वह सिर्फ़ क़ुरआन-ए-करीम के कामिल इत्तिबा करने वालों में पाए जाते हैं। "और दूसरे समस्त फ़िरक़े कि जो हक़ीक़ी और पाक इल्हाम से रो गर्दान हैं क्या ब्रहमो और क्या आर्या और क्या ईसाई वे इस नूर-ए--सदाक़त से बेनसीब और बे-बहरा हैं इसलिए प्रत्येक मुनकिर की तसल्ली करने के लिए हम ही ज़िम्मा उठाते हैं इस शर्त के साथ कि वे सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल करने पर मुस्तइद हो कर पूरी-पूरी इरादत और इस्तिक़ामत और सब्र और सदाक़त से तलब-ए-हक़ के लिए इस तरफ़ तकलीफ़ कुश हों।"

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा चहारुम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग प्रथम, पृष्ठ 350 से 352 हाशिया)

अतः जो कोई भी सच्चे दिल से इस हिदायत की तरफ़ बढ़ेगा उसकी इलमी और अमली ताक़तें बढ़ेंगी। यह क़ुरआन-ए-क़रीम का दावा है और यह दावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आओ मैं तुम्हें बताता हूँ। इस को समझो और मेरे से सीखो कि किस तरह मैं तुम्हें सिखाता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं : "किस क़दर ज़ुलम है कि इस्लाम के उसूलों को छोड़ कर, क़ुरआन को छोड़ कर जिसने एक वहशी दुनिया को इन्सान और इन्सान से बाख़ुदा इन्सान बनाया एक दुनिया परस्त क़ौम की पैरवी की जाए।" फ़रमाते हैं "जो लोग इस्लाम की बेहतरी और ज़िंदगी मग़रिबी दुनिया को क़िबला बना कर चाहते हैं। समझते हैं कि मग़रिबी दुनिया ने बड़ी तरक़्क़ी कर ली है। इस को अपना राहनुमा बनाना चाहते हैं "मग़रिबी दुनिया को क़िबला बना कर चाहते हैं वे कामयाब नहीं हो सकते। कामयाब वही लोग होंगे जो क़ुरआन-ए-करीम के अधीन चलते हैं।"

और यह दुनिया की कामयाबी भी है और दीन की कामयाबी भी है और आख़िरत की कामयाबी भी है। दुनिया-दार तो केवल दुनियावी कामयाबियों पर निर्भरता करते हैं। अगर हर किस्म की कामयाबी लेनी चाहिए, तो क़ुरआन-ए--करीम में मिलेगी। फ़रमाया" क़ुरआन को छोड़कर कामयाबी एक नामुमकिन और मुहाल अमर है। और ऐसी कामयाबी एक ख़्याली अमर है जिसकी तलाश में ये लोग लगे हुए हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के नमूनों को अपने सामने देखो! उन्होंने जब पैग़ंबर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी की और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम किया तो वे सब वाअदे जो अल्लाह तआला ने उनसे किए

थे पूरे हो गए। इबतेदा में मुख़ालिफ़ हंसी करते थे कि बाहर आज़ादी से निकल नहीं सकते और बादशाही के दावे करते हैं।' हाल तो यह है कि छुप के इबादतें कर रहे हैं और आप कहते हैं हम बादशाह बनेंगे।"लेकिन रसूले करीम सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की इताअत में गुम हो कर वह पाया जो सदीयों से उनके हिस्से में नहीं आया था। वह क़ुरआन-ए-करीम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करते और इन्ही की इताअत और पैरवी में दिन रात प्रयास कर रहे थे। इन लोगों की पैरवी किसी रस्म-ओ-रिवाज तक में भी न करते थे जिनको कुफ़्फ़ार कहते थे। कुफ़्फ़ार के किसी रस्म-ओ-रिवाज की पैरवी भी नहीं करते थे, सब कुछ छोड़ दिया। "जब तक इस्लाम इस हालत में रहा वह ज़माना इक़बाल और उरूज का रहा। इस में रहस्य यह था। ख़ुदादारी चेह ग़म दारी।"

फ़रमाया कि "मुस्लमानों की फ़ुतूहात और कामयाबियों की चाबी भी ईमान था।"

आज ईमान के वे मयार नहीं हैं केवल बातें हैं लेकिन अगर ये सब कुछ हासिल करना है तो ईमान को बढ़ाना पड़ना है। फ़रमाया कि "सलाहुद्दीन के मुक़ाबला पर किस क़दर हुजूम हुआ था।" बादशाह सलाहुद्दीन की मिसाल दे रहे हैं कि उसके मुक़ाबले पर कई फ़ौजें इकट्ठी हुईं "लेकिन आख़िर इस पर कोई क़ाबू नहीं पा सका। उसकी नियत इस्लाम की ख़िदमत थी। उद्देश्य एक मुद्दत तक ऐसा ही रहा। जब बादशाहों ने फ़िस्क़ ओ फ़जूर इख़्तेयार किया। फिर अल्लाह तआला का ग़ज़ब टूट पड़ा और रफ़्ता-रफ़्ता ऐसा ज़वाल आया जिसको अब तुम देख रहे हो। अब इस मर्ज़' अर्थात इस्लाम की कमज़ोर हालत" की जो तशख़ीस की जाती है हम उसके मुख़ालिफ़ हैं। हमारे नज़दीक उस तशख़ीस पर जो ईलाज किया जावेगा वे ज़्यादा ख़तरनाक और मुज़िर साबित होगा तशख़ीस ये करते हैं कि जो मग़रिबी दुनिया की तक़लीद करो। तरक़्क़ी करनी है तो यह नए मग़रिबी उलूम हासिल करो। हाँ हासिल करो लेकिन क़ुरआन को अपना राहनुमा बनाओ। फ़रमाया "जब तक मुस्लमानों का रुजू क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ नहीं होगा उनमें वह ईमान पैदा नहीं होगा, यह तंदरुस्त नहीं होंगे। इज़्ज़त और उरूज इसी राह से आएगा जिस राह से पहले आया।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 157-158 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः ईमान और अमल में तरक़्क़ी भी दुनिया दारों की पैरवी से नहीं होगी बल्कि क़ुरआन-ए-करीम की पैरवी से होगी

फिर मुस्लमानों के क़ुरआन शरीफ़ से बे तवज्जागी और उसे पढ़ने में सुस्ती का बड़े दर्द से वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अवतरित फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आकर दुनिया के सामने वह ख़ुदा पेश किया जो इन्सानी कॉन्शस और फ़ितरत चाहती है और उसका पूरा-पूरा वर्णन ख़ुदा तआला की सच्ची किताब क़ुरआन-ए-मजीद में है।' फ़रमाया "मैं इस वक़्त दूसरे लोगों को जो मुस्लमान नहीं हैं अलग रखकर केवल उन लोगों के मुताल्लिक़ कुछ कहूँगा जो मुस्लमान हैं और इन्ही से ख़िताब करूँगा। يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا (अल् फ़रकान : 31)"कि हे मेरे रब यक़ीनन मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को मतरूक कर छोड़ा है। फ़रमाया "याद रखो क़ुरआन-ए-क़रीम हक़ीक़ी बरकात का सरचश्मा और नजात का सच्चा माध्यम है। ये उन लोगों की अपनी ग़लती है जो क़ुरआन-ए-क़रीम पर अमल नहीं करते। अमल नहीं करने वालों में से एक गिरोह तो वह है जिसको इस पर एतिक़ाद ही नहीं और वह इस को ख़ुदा तआला का कलाम ही नहीं समझते। ये लोग तो बहुत दूर पड़े हुए हैं लेकिन वे लोग जो ईमान लाते हैं कि वह ख़ुदा तआला का कलाम है और नजात का शिफ़ा बख़श नुस्ख़ा है। अगर वे इस पर अमल न करें तो किस क़दर ताज्जुब और अफ़सोस की बात है। उनमें से बहुत से तो ऐसे हैं जिन्हों ने सारी उम्र में कभी उसे पढ़ा ही नहीं। अतः ऐसे आदमी जो ख़ुदा तआला के कलाम से ऐसे ग़ाफ़िल और लापरवा हैं उनकी ऐसी मिसाल है कि एक व्यक्ति को मालूम है कि फ़ुलां चशमा निहायत मुसफ़्फ़ा और शीरीं और ख़ुनुक है और इस का पानी बहुत सी रोगों के वास्ते अकसीर और शिफ़ा है। यह इल्म उस को यक़ीनी है लेकिन बावजूद इस इलम के, और बावजूद प्यासा होने और बहुत सी रोगों में मुबतला होने के वे उसके पास जाता। "एक ऐसे पानी का चशमा है जो प्यास भी बुझाता है और ईलाज भी है इसके पास तो जाता नहीं। बड़ा बदक़िस्मत है वह। फ़रमाया "तो यह उसकी कैसी बदक़िस्मती है और जहालत है। उसे तो चाहिए था कि वह इस चशमा पर मुँह रख देता और सेराब हो कर उसके लुतफ़ और शिफ़ा बख़श पानी से हज़ उठाता परंतु वह बावजूद इलम के इस से वैसा ही दूर है जैसा कि एक बे-ख़बर फ़रमाया कि"और इस वक़्त तक इस से दूर रहता है जो मौत आकर ख़ातमा कर देती है।' बाज़ों को मौत आ जाती है लेकिन क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ तवज्जा नहीं करते। "इस व्यक्ति की हालत बहुत ही इबरत बख़श और नसीहत ख़ेज़ है। मुस्लमानों की हालत उस वक़्त ऐसी ही हो रही है। वे जानते हैं कि सारी तरक़्क़ियों और कामयाबियों की किलीद यही क़ुरआन-ए-क़रीम है। जिस पर हमको अमल करना चाहिए परंतु नहीं उसकी पर्वा भी नहीं की जाती। एक व्यक्ति जो निहायत हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही के साथ और फिर निरी हमद-र्दी ही नहीं बल्कि ख़ुदा तआला के हुक्म और ईमा से इस तरफ़ बुलावे तो उसे कज़्ज़ाब और दज्जाल कहा जाता है। इस से बढ़कर और क्या काबिल-ए-रहम हालत उस क़ौम की होगी।"

अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जो ख़ुदा ने क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा फैलाने के लिए इस ज़माने में भेजा है उन्हें कज़्ज़ाब कहा जाता है, झूठा कहा जाता है, मुफ़्तरी कहा जाता है, गालियां दी जाती हैं। मुख़ालिफ़त में बढ़ते चले जा रहे हैं। अब ऐसी हालत से और काबिल-ए-रहम हालत उन लोगों की और क्या होगी। फ़रमाया कि"मुस्लमानों को चाहिए था और अब भी उन के लिए यही ज़रूरी है कि वह इस चशमा को अज़ीमुश्शान नेअमत समझें और उसकी क़दर करें। उसकी क़दर यही है कि इस पर अमल करें और फिर देखें कि ख़ुदा तआला किस तरह उनकी मुसीबतों और मुश्किलात को दूर कर देता है। काश मुस्लमान समझें और सोचें कि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह एक नेक राह पैदा कर दी है और वह इस पर चल कर फ़ायदा उठाएं।' फ़रमाया "यक़ीनन याद रखो कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से अल्लाह तआला पर ईमान लाता है और उसकी पाक किताब पर अमल करता है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत करता है तो अल्लाह तआला उसको असीमित बरकात से हिस्सा देता है। ऐसी बरकात उसे दी जाती हैं जो इस दुनिया की नेअमतों से बहुत ही बढ़कर होती हैं। उनमें से एक आफ़ू-ए-गुनाह भी है।"

अर्थात गुनाह माफ़ हो जाते हैं "कि जब वह रुजू करता और तौबा करता है तो ख़ुदा तआला उसके गुनाह बख़श देता है। दूसरे लोग इस नेअमत से बिल्कुल बे-बहरा हैं इस लिए कि वह इस परा एतक़ाद ही नहीं रखते कि तौबा से गुनाह भी बख़्शे जाया करते हैं। उनमें से कुछ तो यह एतिक़ाद रखते हैं कि ख़ाह कुछ ही क्यों न हो हमको जूनों में जाना पड़ेगा जो बाअज़ हिंदूओं का अक़ीदा है" और माफ़ी नहीं मिल सकती। ईसाइयों के उसूल के मुवाफ़िक़ मसीह के ख़ून पर एक--बार ईमान ला कर अगर गुनाह हो जाए तो फिर सलीब-ए-मसीह कोई फ़ायदा नहीं दे सकती क्योंकि मसीह दो मर्तबा सलीब पर नहीं चढ़ेगा तो क्या यह बात साफ़ नहीं है कि इन दोनो के लिए बख़्शे जाने और नजात की राह बंद है क्योंकि सुदूर-ए-गुनाह तो रुक नहीं सकता।" यह तो होता रहता है इन्सान कुछ लग़्ज़िशें करता रहता है।"अगर ख़ुदा तआला की किसी नेअमत का शुक्र न करे तो यह भी गुनाह है और ग़फ़लत करे तो यह भी गुनाह है और उन गुनाहों पर भी जूनों में जाना पड़ेगा या मसीह को दुबारा सलीब नहीं दिया जाएगा। इस लिए पूर्णतः मायूस होना पड़ेगा बाक़ी मज़ाहिब में तो अगर गुनाह सरज़द होते जाते हैं तो फिर मायूसी है, कोई बख़शने का ज़रीया नहीं है "परंतु अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को यह शिक्षा नहीं दी। इन के लिए हर वक़त तौबा का दरवाज़ा खुला है। जब इन्सान उसकी तरफ़ रुजू करे और अपने पिछले गुनाहों का इक़रार करके इस से ख़्वास्तगार-ए-माफ़ी हो और आइन्दा के लिए नेकियों का अज़म करे तो अल्लाह तआला उसे माफ़ कर देता है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरी बातों को मुतवज्जा हो कर सुनो। ऐसा ना हो कि ये बातें सिर्फ़ तुम्हारे कान तक ही रह जाएं और तुम उनसे कोई फ़ायदा न उठाओ और ये तुम्हारे दिल तक न पहुंचीं।"अतः ये बातें सुनो और अपने दिल तक पहुँचाओ, सारी केवल कानों तक न रखो। फ़रमाया "नहीं। बल्कि पूरी तवज्जा से सुनो और उनको दिल में जगह दो और अपने अमल से दिखाओ कि तुमने उनको सरसरी तौर पर नहीं सुना और उनका असर इसी आन तक नहीं बल्कि गहरा है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 181 से 183 ऐडीशन 1984 ई.)

यहां बैठ के ख़ुत्बा सुनने तक ही असर नहीं है बल्कि बाद में भी इस पर अमल हो और अमल यही है कि हम क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ें। रमज़ान में उसकी आदत डालें। फिर मुस्तक़िल ज़िंदगी का हिस्सा बनाएँ और फिर उसकी शिक्षा पर अमल करने वाले हूँ।

अहमदियों पर यह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम क़ुरआन-ए-करीम में तहरीफ़ करने वाले हैं। पाकिस्तान में आजकल इसी क़ानून के पीछे अहमदियों पर मौलवियों की तरफ़ से मुक़द्दमे क़ायम किए जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में वर्णन कर देता हूँ। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन-ए--क़रीम कानून-ए-आसमानी और नजात का माध्यम है। अगर हम इस में तबदीली करें तो ये बहुत ही सख़्त गुनाह है। ताज्जुब होगा कि हम यहूदियों और ईसाइयों पर भी एतराज़ करते हैं और फिर क़ुरआन-ए-क़रीम के लिए वही रवा रखते हैं। मुझे और भी अफ़सोस और ताज्जुब आता है कि वह ईसाई जिनकी किताबें वास्तव में मुहर्रिफ़ मुबद्दल हैं वे तो कोशिश करें कि तहरीफ़ साबित न हो और हम ख़ुद तहरीफ़ करने की मैं!!!" अर्थात जिनकी पुरानी शरियतों की किताबें तहरीफ़ शूदा हैं वह तो कहते हैं नहीं तहरीफ़ हुई लेकिन हमारे कुछ अमल ऐसे हैं और बाअज़ बातें ऐसी हैं कि ख़ुद हम तहरीफ़ कर रहे होते हैं। फ़रमाया कि"देखो इफ़्तिरा करने वाला ख़बीस और मूज़ी होताहै।' आप अपना नुक्ता-ए--नज़र वर्णन फ़रमाया कि तुम कहते हो कि क़ुरआन-ए-करीम में तहरीफ़ हो गई। इफ़्तिरा करने वाला ख़बीस और मूज़ी होता है"और ख़ुदा तआला के कलाम में तहरीफ़ करना यह भी इफ़्तिरा है इस से बचोगे।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 168-169 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमारी शिक्षा तो यह है कि क़ुरआन-ए-करीम में हर किस्म की तहरीफ़ से बचना है क्योंकि तहरीफ़ करने वाला ख़बीस और अपवित्र है। आप अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया। अतः हम पर ये इल्ज़ाम लगाने वालों को अक़्ल करनी चाहिए कि क्या तहरीफ़ करके हम अपने आपको ख़बीसों और मूज़ियों में शुमार करने वाले हो जाऐंगे या बनना चाहेंगे।

क़ुरआन-ए-करीम के कामिल किताब होने पर आप क्या इरशाद फ़रमाया। फ़रमाया : "मैं क़ुरआन और अहकाम क़ुरआन की ख़िदमत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पाक मज़हब की ख़िदमत के वास्ते कमरबस्ता हूँ और जान तक मैं ने अपनी इस राह में लगादी है। और मेरा पूर्ण विश्वास है कि क़ुरआन के सिवा जो कामिल अकमल और मुकम्मल किताब है और उसकी पूरी इताअत और बग़ैर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी के निजात संभव ही नहीं और क़ुरआन में कमी बेशी करने वाले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत का जुआ अपनी गर्दन से उतारने वाले को काफ़िर और मुर्तद यक़ीन करता हूँ।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 309 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह उन सारे सवालों का जवाब है जो हम पर इल्ज़ाम लगाए जाते हैं।

फिर फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा से नजात की राह और नूर मिलता है। इस बात को वाज़िह फ़रमाया कि इस के इलावा और कोई किताब है ही नहीं जो यह नूर दे सके और हिदायत दे सके। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं : "सच्चा रहनुमा क़ुरआन शरीफ़ है और उसकी पैरवी इसी जहान में नजात के अनवार दिखलाती है और सआदत अज़मी तक पहुंचाती है। وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا (बनी इसराईल : 73)"जो इस दुनिया में अंधा हो वह आख़िरत में भी अंधा है और राह के एतबार से सबसे ज़्यादा भटका हुआ है। وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا फ़रमाया कि "जो व्यक्ति मआरिफ़ हक़्क़ा के हुसूल के लिए पूरी-पूरी कोशिश करे और केवल कील-ओ-क़ाल में न फंसा रहे इस पर बख़ूबी वाज़िह हो जाएगा कि बातिनी नेअमतों के हासिल करने के लिए केवल एक ही राह है अर्थात यह कि मुताबेत हज़रत ख़ातिमुल् अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इख़तेयार की जाए और शिक्षा क़ुरआन को अपना मुर्शिद और रहबर बनाया जाए।" आप अलैहिस्सलाम ने यहां अल् फ़ाज़ अरबी के इस्तिमाल किए हैं। फ़रमाया पूरी कोशिश करे और केवल बातों में न फंसे रहे अर्थात हदीसों के हवाले न देता रहे। इस पर बख़ूबी स्पष्ट हो जाएगा कि बाक़ी बातिनी नेअमतों के हासिल करने के लिए केवल एक ही राह है अर्थात यह कि मुताबअत हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इख़तेयार की जाए और शिक्षा क़ुरआन को अपना मुर्शिद और राहबर बनाया जाए।" यही वजह है कि अगरचे हिंदूओं और ईसाइयों में कई लोग रियाज़त और जोग में वे मेहनत करते हैं कि जिससे उनका जिस्म ख़ुशक हो जाता है और बरसों जंगलों में काटते हैं और कठोर कसरत बजा लाते हैं।' बड़ी सख़्त रियाज़तें करते हैं।"लज़्ज़ात से पूर्णतः दूर हो जाते हैं परंतु फिर भी वे अन-वार-ए-ख़ास्सा उनको नसीब नहीं होते कि जो मुस्लमानों को बावजूद किल्लत--ए-रियाज़त-ओ-तर्क-ए-रहबानियत के नसीब होते हैं। "वह विशेषता उनको नहीं मिल सकतीं लेकिन अगर क़ुरआन-ए-करीम पर अमल करें तो तब यह होते हैं। फ़रमाया "अतः इस से साफ़ ज़ाहिर है कि सद मार्ग वही है जिसकी शिक्षा क़ुरआन शरीफ़ करता है।

निसन्देह यह सच बात है कि अगर कोई स्पष्ट तौबा इख़तेयार कर के दस रोज़ भी क़ुरआन के उद्देश्य के अनुसार व्यस्तता इख़तेयार करे तो अपने क़लब पर-नूर नाज़िल होता देखेगा। यह विशेषताएं दीन-ए-इस्लाम की बिना इमतेहान नहीं।" यह नहीं कि केवल बात कर दी, उसका कोई इमतेहान नहीं बल्कि "सदहा पाक बातिनों ने इस राह से फ़ैज़ पाया है।"

(मक्तूबात-ए-अहमद ,भाग प्रथम, पृष्ठ 549 ऐडीशन दोम)

इस की सैंकड़ों मिसालें ऐसी हैं कि जिन्हों ने इस पर अमल किया और फ़ैज़ पाया। ज़बानी दावा नहीं है बल्कि जिन्हों ने अमल किया उन्होंने फ़ैज़ पाया है और सैंकड़ों हज़ारों इसकी मिसालें मौजूद हैं। अतः हमें भी चाहिए कि इस तरफ़ पहले से बढ़कर तवज्जा करें और अपनी नसलों में भी इसकी अहमियत पैदा करें।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि इन्सानों को ख़ुदा तआला पर हक़ीक़ी ईमान नहीं है बल्कि उन लोगों की हालत अभी कमज़ोर है जो बज़ाहिर ईमान का दावा करते हैं। आप इन्सान की नफ़सियात को सामने रखते हुए फ़रमाया और यह सबूत क़ुरआन की शिक्षा की रोशनी में दिया। इसलिए फ़रमाते हैं कि "हे दोस्तो! गुनाह से बे-ख़ौफ़ होने की यही वजह है कि ग़ाफ़िल इन्सान को न ख़ुदा पर यक़ीनी ईमान है न उसकी सज़ा पर। अन्यथा इन्सान अपनी ज़ात में बुज़दिल है।" इन्सान अपनी ज़ात में बड़ा बुज़दिल है। "अगर एक घर में किसी छत के नीचे' मिसाल दी है आप कि देखो "अगर एक घर में किसी छत के नीचे चंद आदमी बैठे हों और अचानक सख़्त भूचाल आवे तो वे सब के सब बाहर की तरफ़ दौड़ते हैं। इस का यही कारण है कि वे यक़ीन रखते हैं कि अगर चंद मिनट और छत के नीचे बैठे रहे तो मौत का शिकार हो जाएंगे छत नीचे आ पड़ेगी।" मगर चूँकि गुनाह करने वालों को ख़ुदा पर यक़ीन नहीं, न उस की सज़ा पर यक़ीन है इस लिए वे लोग दिलेरी से गुनाह करते हैं।"फ़रमाया कि "जो लोग झूठे और बनावटी माध्यम निजात के लिए ढूँढते हैं वे और भी गुनाह पर दिलेर हो जाते हैं क्योंकि झूठा ज़रीया कोई यक़ीन नहीं बख़्शता परंतु जिस व्यक्ति को यह इलम यक़ीनी हासिल हो जाता है कि वास्तव में ख़ुदा है और वास्तव में गुनाहगार बिना सज़ा नहीं रहेगा इस शर्त के साथ कि यक़ीनी इलम हो न महज़ रस्मी। वह निस-न्देह अपने को गुनाह की राहों से बचाएगा। सच्ची फ़िलोसफ़ी निजात की यही है जो क़ुरआन शरीफ़ ने हम पर ज़ाहिर की अगर चाहो तो क़बूल करो।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 422-423)

अतः अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करें। इस पर ईमान में कामिल होने की कोशिश करें तो निजात है अन्यथा बहुत मुश्किल है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मुबारक वह जो ख़ुदा के लिए अपने नफ़्स से जंग करते हैं और बद-बख़्त वह जो अपने नफ़्स के लिए ख़ुदा से जंग कर रहे हैं और इस से मुवा-फ़िक़त नहीं करते जो व्यक्ति अपने नफ़्स के लिए ख़ुदा के हुक्म को टालता है वह आसमान में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा" अर्थात कि वह अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल नहीं कर सकेगा।" अतः तुम कोशिश करो जो एक नुक़्ता या एक बिन्दु क़ुरआन शरीफ़ का भी तुम पर गवाही न दे ताकि तुम इसी के लिए पकड़े न जाओ क्योंकि एक ज़रा बदी का भी काबिल-ए-पादाश है। वक़्त थोड़ा है और कार्य करने वाली आयु छोटी। तेज़-क़दम उठाओ जो शाम नज़दीक है जो कुछ पेश करना है वह बार-बार देख लो ऐसा न हो कि कुछ रह जाए और ज़ियान कारी का माध्यम हो या सब गंदी और खोटी मता हो जो शाही दरबार में पेश करने के लायक़ न हो।" (कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 25-26)

अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी अर्थों में क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा को समझने और इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हम हमेशा अल्लाह तआला का शुक्र करने वाले और जो हिदायत उसने दी है उससे फ़ायदा उठाने

वाले हों। हमें ईमान और यक़ीन और अल्लाह तआला की ख़शीयत में अल्लाह तआला बढ़ाए। हम केवल रमज़ान में नहीं बल्कि हमेशा क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार अपनी ज़िंदगीयां गुज़ारने वाले हों। जब यह होगा तभी हम कह सकेंगे कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने की कोशिश की जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में इस्लाम की निशात सानिया के लिए भेजे गए थे। क़ुरआन-ए-करीम की हुकूमत का जुआ हमारी गर्दनों में डालने के लिए भेजे गए थे। अल्लाह तआला उस रमज़ान में और फिर बाद में भी हमेशा हमें क़ुरआन की शिक्षा से फ़ैज़याब होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता रहे।

दुआओं में फ़लस्तीनियों को भी याद रखें जंग के इलावा भूख और बीमारी से अब बच्चों और मासूमों की जानें ज़ाए हो रही हैं। अब तो यू.एन (UN) के इदारे भी यह कहने लग गए हैं कि यह इन्सान का पैदा-कर्दा क़हत और भूख है, आफ़त है जो इसराईली हुकूमत की सख़्ती और ढिटाई की वजह से पैदा हो रही है। अगर रस्ते खुल जाएं और इमदाद जल्द पहुंच जाए तो अभी भी बेहतरी आ सकती है।

इसी तरह सूडान की अवाम के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके लीडरों और साहब-ए-इक़्तेदार लोगों को अक़्ल दे। वहां भी भूख और बीमारी से लोग मर रहे हैं और अपने ही लोग अपने हम वतनों पर ज़ुलम कर रहे हैं। ये सब इसलिए कि लालच है और क़ुरआन शिक्षा को भूल गए हैं और जो अल्लाह तआला की तरफ़ से इस ज़माने में भेजा गया है उसे मानने से इंकार कर रहे हैं।

इसी तरह बहुत से दूसरे मुस्लमान देशों की हालत है वहां भी काफ़ी तकली-फ़-दह सूरत-ए-हाल है। हुकूमतें अपने अवाम पर ज़ुलम कर रही हैं। आपस में लोग लड़ रहे हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करे।

पाकिस्तान के हमारे अहमदी असीरान हैं उनके लिए दुआ करें, यमन के असीरान हैं उनके लिए भी दुआ करते रहीं। पाकिस्तान में उमूमी हालात के लिए भी दुआ करते रहें। अल्लाह तआला अहमदियों को महफ़ूज़ रखे।

नमाज़ के बाद मैं कुछ जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा उनका वर्णन कर देता हूँ।

पहला वर्णन है डाक्टर ज़हीरुद्दीन मंसूर अहमद साहिब अमरीका का जो पिछले दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह साह-बज़ादी अमतुल रशीद बेगम और मियां अब्दुर्रहीम अहमद साहिब के बेटे थे। नन्हियाल की तरफ़ से आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के पड़ नवासे और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के नवासे थे। दधियाल की तरफ़ से हज़रत प्रोफ़ैसर अली अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते थे। उन्होंने मैडीकल की डिग्री हासिल की और इसके बाद फ़ौज में भी काम करते रहे। फिर रब्वाह में मैडीकल क्लीनिक अपना क्लीनिक खोला और इर्द-गिर्द के ग़रीबों की काफ़ी मदद करते रहे। लोगों ने उनके क्लीनिक से भरपूर फ़ायदा उठाया। ख़ुद्दामुल् अहमदिया और आँसारू-ल्लाह में भी उनको मुहतमिम और क़ायद के तौर पर ख़िदमात की तौफ़ीक़ मिलती रही। जब से अमरीका में गए हैं वहां उनको नैशनल सैक्रेटरी तालीमुल-क़ुरआन की तौफीक मिली।

ख़िलाफ़त से भी उनका बेमिसाल ताल्लुक़ था। इताअत और इशक़ का ताल्लुक़ था। मैं ने भी देखा है कि ख़िलाफ़त के बाद मेरे साथ उन्होंने बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ का इज़हार किया। हमेशा दुआ के लिए लिखते रहते थे। हर काम से पहले दुआ के लिए कहते थे। शोबा तालीमुल-क़ुरआन के लिए भी उन्होंने बड़ी मेहनत और लगन से काम किया है।

उनकी पत्नी रिज़वाना साहिबा कहती हैं कि क़ुरआन-ए-करीम से बेपनाह मु-हब्बत थी और तिलावत का बहुत एहतेमाम करते थे। कार में भी और सफ़र के दौरान या ख़ुद तिलावत करते या कोई साथ होता तो बच्चों से कहते तिलावत करो और मुझे सुनाओ। फिर दरूस्तगी भी करते थे।

उनकी बेटी सलमाना कहती हैं कि शादी के बाद भी आप मुझे बाक़ायदगी से फ़ोन करके क़ुरआन-ए-मजीद का अनुवाद सिखाते और छुट्टियों में अपने नवासों को भी ख़ुद क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाते थे और फिर एक ख़ूबी यह थी कि किसी भी छोटी बड़ी ग़लती पर फ़ौरी माफ़ी मांगते थे। नौ मुबाईन को भी अपनी ख़ुशियों में शामिल करने का ख़ास एहतिमाम करते। बच्चों को उसकी तलकीन करते।

उनके दामाद मिर्ज़ा नबील अहमद कहते हैं कि प्रत्येक को बड़े प्यार और मु-हब्बत से मिलते। बाजमाअत नमाज़ के पाबंद, क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत ख़ुद भी करते और हमें भी इस की तलक़ीन करते। कोविड के दिनों में अपने घर में सबको इकट्ठा करके नमाज़ पढ़ाते रहे और हमेशा यह कहते थे कोई मसला हो ख़लीफ़-ए-वक़्त को ख़त लिखो। उनकी बेटी मफ़लह ने लिखा है कि हिमेश हमें कहा कि सोच मुसबत रखनी चाहिए। अल्लाह पर यक़ीन रखो। हुस्न-ए-ज़न लोगों पर किया करो और आजिज़ी का मुज़ाहरा करो। ग़लतियों को तस्लीम कर लो। इसी तरह उनकी भांजी ने भी उनकी इन्ही ख़सुसीआत का वर्णन किया है और यह भी लिखा है कि हर व्यक्ति जो अफ़सोस के लिए आ रहा है उनके बारे में यही कहता है कि बड़ी नरम ज़बान थी और बड़ी मेहरबान थी।

फ़र्हाद राना साहिब मुरब्बी हैं। ये कहते हैं पंद्रह साल की आयु से उनसे ताल्लुक़ पैदा हुआ और उन्होंने मुझे जमाअत के साथ जोड़ा बल्कि उन्ही की वजह से मैं ने वक़्फ़ भी किया। चौधरी वसीम अहमद साहिब लिखते हैं कि 1974 ई. में एक दफ़ा ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे हमें किसी प्राजैक्ट पर काम दिया तो यह बड़ी मेहनत से और आजिज़ी से यह काम करते थे और बाअज़ दफ़ा सारी सारी रात काम में लगे रहते थे। मरीज़ों की बड़ी ख़िदमत करने वाले, उनका ख़्याल रखने वाले, ईलाज के इलावा अपनी जेब से उनको दवाईयां ख़रीदने के लिए पैसे भी दे दिया करते थे। ये मेरे ख़ालाज़ाद भी थे। ग़रीबपरर्वरी और मेहमान-नवाज़ी में खासतौर पर मैं ने उनके घर जा के भी देखा है। जलसे के दिनों में भी उनकी वालिदा और उनके वालिद दोनों का मेहमान-नवाज़ी बहुत ख़ास वस्फ़ था। मियां बीवी नेक हों तभी आगे बच्चों पर भी नेकी का असर होता है। जलसे के दिनों में अपना घर ख़ाली कर देते थे और ख़ुद बाहर टेंट लगा के रहा करते थे और सारा घर मेहमानों से भरा होता था तो यही नेक फ़ितरत उनमें भी आई है।

दूसरा वर्णन है श्रीमान हुस्न आबिदीन आग़ा साहिब ये सीरियन (Syrian) थे। आजकल कैनेडा में थे। पिछले दिनों उनकी अस्सी साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके बेटे अब्दुलक़ादिर आबिदीन लिखते हैं कि मेरे वालिद सुनी घराने में पैदा हुए। फिर इसके बाद शीया मज़हब इख़तेयार कर लिया फिर बड़े भाई (उनके जो बड़े भाई थे) बशीर आबेदीन को एम.टी.ए के ज़रीया से जमात से तआरुफ़ हुआ। मुख़्तलिफ़ उमूर के बारे में जमात की तफ़सीरात और तशरीहात से प्रभावित हुए और अहमदियत की सदाक़त के क़ायल हो गए। फिर उन्होंने घर में बात शुरू की। कहते हैं मेरे और मेरे वालिद साहिब और मेरे भाई के दरमयान दो महीने बेहस मुबाहिसा चलता रहा यहां तक कि हम भी मुतमइन हो गए और एक रोज़ बैअत फ़ार्म फ़िल (fill) कर दिया। कहते हैं मेरे वालिद का बहनों पर भी असर था उनकी वजह से बहनों ने भी अहमदियत क़बूल कर ली और समस्त ख़ानदान अहमदी हो गया। फिर उनका घर मर्कज़ जमात बन गया जहां अहम-दियत की तब्लीग़ भी होती थी, नमाज़ें भी पढ़ी जाती थीं, जुमा भी पढ़ा जाता था। शाम में जमात में बतौर सदर ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिली। नमाज़-ए-तहज्जुद बाक़ायदगी से अदा करने वाले, जमाती कुतुब का बड़ी बाक़ायदगी से अध्ययन करने वाले थे। आला अख़लाक़ के मालिक थे ख़िलाफ़त से बड़ा प्यार का ताल्लुक़ था। मुबल्लग़ीन की क़दर और एहतेराम करते थे। निहायत सादा ज़िंदगी गुज़ारी। मेहमान-नवाज़ी बहुत करते थे।

उनकी पत्नी ज़ुबेदा साहिबा कहती हैं आला अख़लाक़ के मालिक थे। बड़े अच्छे शौहर थे। घर में मेरे कामों में मदद करते थे। मेरे बहन भाईयों और रहमी रिश्तों से भी बड़ा प्यार का ताल्लुक़ रखते थे। बच्चों को सच बोलने, ईमानदार होने की हमेशा तलक़ीन की। लोगों से प्यार करने की तलक़ीन की। मेहमान-नवाज़ी करने की तलक़ीन की। बड़े तहज्जुद गुज़ार भी थे और चंदों में हमेशा बड़ी बाक़ायदगी थी।

एक पोते उनके जामिआ अहमदिया में पढ़ते हैं। यह कहते हैं मेरे दादा बड़े आजिज़, साबिर और क़नाअत पसंद इन्सान थे। तहज्जुद की बाक़ायदगी भी मैं ने उनमें देखी है। क़ुरआन-ए-करीम की बाक़ायदा तिलावत करने वाले और तमाम लोगों से मुहब्बत करते थे। क्षमा करने और अंदेखा करने की विशेषताएं भी उनमें थी।

मुसलेह शंबूर साहिब मुरब्बी कहते हैं। क़नाअत की सिफ़त उनमें नुमायां थी। माली मुश्किलात में होते तो भी किसी से मदद नहीं मांगते थे बल्कि अगर थोड़े बहुत पैसे होते तो वह भी चंदे में दे देते थे। किसी के मुहताज होना नहीं चाहते थे। कहीं दुकान पर चीज़ लेने के लिए जाना होता तो हमने कई दफ़ा कहा कि हम आपको गाड़ी में ले जाते हैं लेकिन वह सर्दीयों में भी पैदल चल के जाया करते थे

बल्कि कहते हैं कि आख़िरी दिनों में भी जबकि पैदल चलना उनके लिए मुश्किल था उनको सर्दी में मैं ने पैदल दुकान से आते हुए देखा है। किसी पर इन्हिसार करना नहीं चाहते थे और बड़े शुक्रगुज़ार थे।

हाफ़िज़ अब्दुल हई भट्टी साहिब कहते हैं कि हसन आबेदीन साहिब के वजूद में ख़ाकसार को हमेशा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इल्हाम कि يَدْعُوْنَ لَكَ صُلَحَاءُ الْعَرَبِ وَاَبْدَالُ الشَّامِ पूरा होता नज़र आता है। जब गले मिलते तो कहते कि मुझे आपसे मुहब्बत है क्योंकि आप महदी अलैहि-स्सलाम की क़ौम में से हैं और जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वर्णन आता तो बेसाख़ता बार-बार अलैहिस्सलाम दोहराते। उनकी आँखें नम हो जातीं और यह फ़रमाते कि इस ज़माने में जहां हर तरफ़ धुआँ फैला हुआ है हक़ीक़ी इस्लाम से अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें रोशनास किराया। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला वर्णन है उस्मान हुसैन मुहम्मद ख़ैर साहिब। उनकी पिछले दिनों साठ साल की उम्र में वफ़ात हुई। यह सऊदी अरब में मुक़ीम थे। वैसे यह सूडानी थे। 2007 ई. में वहां एम. टी. ए के ज़रीया से उन्होंने जमाअत से परिचय हासिल किया और फिर बैअत करली। फिर वापस सूडान आ गए। घर में डिश लगवाई और अपने अहल-ए-ख़ाना को और बहन भाईयों को तब्लीग़ शुरू की। उनके ख़ानदान के बाक़ी लोग तीन भाई, एक बहन और बीवी बच्चे भी अहमदी हो गए। और फिर क्योंकि पहले उनको बैअत की क़बूलियत के ख़त का जवाब नहीं मिला था तो फिर उन्होंने अपने बहन भाईयों के साथ दुबारा बैअत का ख़त लिखा और जब बैअत का ख़त मिल गया तो फिर उनको तसल्ली हुई। सूडान में जमात का सैंटर उनके घर में था और वहीं जुमा अदा करते थे और एम.टी. ए देखते। दरस-ओ-तदरीस होती। तफ़सीर कबीर पढ़ने का सिलसिला जारी रहता। जमात के लिए ख़र्च करने में बड़े सख़ी थे। अहमदियों के आने पर बहुत ख़ुश होते। कभी उन्होंने जमात से किसी ख़र्च के लिए मुतालिबा नहीं किया अपनी जेब से ख़र्च किया करते थे। इसी तरह कभी जमात में कोई ओहदा भी नहीं लिया। जब कहा जाता कि यह काम आप ले लें या ओहदा ले लें तो कहते कि नौजवानों को दें ताकि वे ज़्यादा काम सीखेँ। मरहूम के बीवी बच्चे भी उन्ही की तरह ख़िदमत करने वाले हैं। एक बेटी डाक्टर है और बेटा भी शोबा माल में डयूटी दे रहा है। अब तक उनका घर मर्कज़ के तौर पर इस्तिमाल हो रहा था लेकिन ख़ाना-जंगी के बाद अब लोग मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में चले गए हैं। राबते कट गए हैं। पहले भी मैं ने कहा था दुआ करें इनके हालात भी ठीक हों और दुबारा यह जमात इकट्ठी हो के रह सके। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा दो बेटे और बेटियां हैं।

अगला वर्णन मुहम्मद ज़हरावी साहिब अल्-जज़ायर का है। उनकी गुज़शता दिनों अड़तालीस साल की उम्र में वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। सदर जमात लिखते हैं कि मरहूम कैंसर के मरीज़ थे। जमात से बहुत मुहब्बत रखते थे। बड़े मेहमान नवाज़ और ख़िलाफ़त के मुतीअ थे। फ़ौज में मुलाज़िम थे और दोस्तों के आपके घर जाने पर बहुत ख़ुश होते थे और ग़ुर्बत के बावजूद उनकी मेहमान-नवाज़ी बहुत करते थे। अदालती कार्रवाई का भी उनको सामना करना पड़ा। जज ने उनसे पूछा कि आप जैसा अल्जज़ायरी एक इंडियन व्यक्ति की इत्तिबा कैसे कर सकता है? तो आपने कहा कि अल्-जज़ायर जैसा मुलक इंडियन व्यक्ति से कैसे डर सकता है? अर्थात अगर हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम को हक़ीर जानते हो तो इस क़दर डरने की ज़रूरत क्या है। यही आजकल मुल्लाओं का हाल है। उनको अगर ख़ौफ़ नहीं है तो फिर खुल के हमें हमारी बात करने क्यों नहीं देते। तब्लीग़ में रोकें क्यों डालते हैं। केवल ख़ौफ़ है कि हमारी बातें क्योंकि सच्च हैं लोग इस को क़बूल करेंगे इसलिए झूठ और ग़-लत-सलत बातें जमात की तरफ़ मंसूब करो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की तरफ़ मंसूब करो।

ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ के बारे में यह लिखते हैं कि अल्-जज़ायर में जब मैं ने उनको कहा कि चैरिटी के तौर पर रजिस्टर्ड करवा लें तो बाअज़ लोगों का ख़्याल था कि नहीं। नहीं करनी चाहिए तो उन्होंने कहा कि जब ख़लीफ़-ए-वक़्त का हुक्म आ गया तो फिर बहसें बंद करो और काम करो और फिर सदर जमात को कहा कि हम आपके साथ हैं। आप कदम बढ़ाएं।

फिर अगला वर्णन है सईद अहमद वड़ायच साहिब इबन अब्दुल् हई वड़ायच साहिब रब्वाह का। पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। उनके पड़दादा के ज़रीया उनके घर अहमदियत आई थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। नज़ारत उमूर-ए-आमा की रिपोर्ट के अनुसार उन पर मुक़द्दमात भी हुए। तौहीन रिसालत का बेबुनियाद इल्ज़ाम था और गिरफ़्तारी अमल में आई और फिर बहरहाल मुक़द्दमा चला और बाइज़्ज़त बरीयत भी हो गई। तीन साल दो माह उनको असीरी में रहने की तौफ़ीक़ मिली लेकिन दुश्मनी इतनी ज़्यादा थी कि बरीयत के बावजूद फिर अपने घर नहीं जा सकते थे। फिर रब्वाह में रहे।

अगला वर्णन है शहबाज़ गोन्दल साहिब का जो अहमद ख़ान गोन्दल साहिब के बेटे थे। यह भी रब्वाह के थे आजकल हॉलैंड में थे। उनकी गुज़शता दिनों में हॉलैंड में ही वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके ख़ानदान में भी अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा ख़ुशी मुहम्मद साहिब आफ़ नवाबशाह के माध्यम से हुआ जिन्हों ने ख़िलाफ़त सानिया में बैअत की थी। 1992 ई. में उनको असीराने राहे मौला होने का भी एज़ाज़ मिला और कोटरी से उनको गिरफ़्तार किया गया। तौहीन-ए-रसालत और तब्लीग़ के बेबुनियाद इल्ज़ाम लगाए गए और दस साल तक उनका मुक़द्दमा चलता रहा। दो तीन माह असीरी में रहे। बाद में ज़मानत तो हो गई लेकिन मुक़द्दमा बहरहाल दस साल तक चलता रहा। पांचों नमाज़ों के पाबंद तहज्जुद गुज़ार भी थे। जमाती कामों में पेश पेश रहते जो काम भी सपुर्द किया जाता बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से सरअंजाम देते

अल्लाह तआला इन सब मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। नमाज़ के बाद इन सबकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

भी हाथ उठाता हूँ मुझे आसमान से मलायका की यह आवाज़ सुनाई देती है اَيُّهَا الْكُفَّارُ اُقْتُلُوا الْفُجَّارَ अर्थात हे फ़ाजिर के काफ़िरो मुस्लमानों को ख़ूब मारो। हालाँकि बज़ाहिर उन में से एक फ़रीक़ जो मारा जा रहा था ख़ुदा और उसके रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता था और दूसरा फ़रीक़ दीन से कोई ताल्लुक़ नहीं रखता था परंतु चूँकि मुस्लमान कहलाने वालों ने मज़हब को केवल नाम के तौर पर क़बूल किया था, अपने क़ुलूब में उन्होंने कोई तग़य्युर पैदा नहीं किया था इसलिए उन पर अज़ाब आ गया। अतः इन्सान को चाहिए कि वह हमेशा अपने ईमान का जायज़ा लेता रहे और देखता रहे कि उसका ख़ुदा तआला के साथ कैसा ताल्लुक़ है। और जबकि आसानी और तंगी दोनों हालतों में वह वफ़ादारी के साथ अपने अह्द पर क़ायम है या नहीं। अगर इनाम के वक़्त वह ख़ुदा तआला की तारीफ़ करता और मुसीबत के वक़्त यह कहना शुरू कर देता है कि ख़ुदा ने पहले मुझ पर कौन सा एहसान किया था जो यह मुसीबत भी भेज दी तो साफ़ पता लग जाता है कि इस का ईमान महिज़ धोखा था। पूर्ण ईमान वाला वही व्यक्ति कहला सकता है जो हर कठिनाई और मुसीबत में साबित-क़दम रहता है बल्कि कठिनाइयों के आने पर वह अल्लाह तआला के हुज़ूर और ज़्यादा झुक जाता और अपने अंदर पहले से भी ज़्यादा विनम्रता और सादगी पैदा करता है। यही बात उस जगह वर्णन की गई है और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हें हर हालत में ख़ुदा तआला से अपना ताल्लुक़ मज़बूत रखना चाहिए और किसी मुसीबत में भी इस से अपना ताल्लुक़ क़ता नहीं करना चाहिए। हदीसों में आता है कि एक दफ़ा एक बदवी ने रसूले करीम करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बैअत की और इस्लाम में दाख़िल हो गया परंतु चंद दिनों के बाद ही उसे बुख़ार हो गया। इस पर वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और कहने लगा कि मैं अपनी बैअत वापस लेता हूँ क्योंकि मुझे तप आने लगा है परंतु उसके मुक़ाबला में ऐसे भी लोग थे जिन्हों ने अपनी जानें क़ुर्बान करदीं परंतु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जो अह्द उन्होंने किया था इस में कोई रख़्ना वाक़्य नहीं होने दिया। हक़ीक़त यह है कि सच्चे ताल्लुक़ और इख़लास का पता ही उसी वक़्त लगता है जब इन्सान पर कोई कठिनाई आती है अन्यथा आराम और आसाइश की हालत में तो कमज़ोर ईमान वाले भी बड़ी अक़ीदत और ताल्लुक़ का इज़हार करते हैं।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 17 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

8 अक्तूबर 2022 ई. शनिवार का दिन

मेहमानो के ईमान बढ़ाने वाले विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस ख़िताब ने इस तक़रीब में शामिल मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। कुछ मेहमानों केविचार प्रस्तुत हैं :

एक मेहमान Jeff Williams साहिब अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं मैं अमन और इन्सानियत का पैग़ाम से बहुत ख़ुश हुआ हूँ। ख़लीफ़ा चाहते हैं कि हम सब मुत्तहिद हो कर मुआशरे की बेहतरी के लिए काम करें और यही वजह है कि यहां मस्जिद बन रही है। जबकि मुझे इस बात का अफ़सोस है कि हुज़ूर को इस बात का भी वर्णन करना पड़ा कि मस्जिद किसी के लिए ख़तरा का बायस नहीं है। मुझे ख़ुशी है कि आपने इस पर बात की। मुझे इस प्रोग्राम का हिस्सा बनने पर गर्व है। यह निश्चित तौर पर एक ख़ूबसूरत मस्जिद है। यहां प्रत्येक इबादत के लिए आ सकता है। यह भी बहुत प्रभावित करने वाली बात है कि किस तरह अमरीका की विभिन्न रियास्तों और दीगर देशों से लोग हज़ारों मील का सफ़र करके हुज़ूर की बातें सुनने के लिए और इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए इकट्ठे हैं।

एक मेहमान सुलतान साहिब अपने तास्सुरात का इज़हार करते हैं हुज़ूर अनवर ने जो समस्त दुनिया के लिए अमन का पैग़ाम दिया है, यह मेरे ख़्याल में एक बेहतरीन पैग़ाम है। मैं समझता हूँ कि यह बहुत ज़रूरी है कि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इस भय को दूर किया जाए कि वह यहां क़बज़ा कर लेंगे। हुज़ूर ने स्पष्ट बताया है कि चूँकि मुस्लमानों को ख़त्म करने की कोई प्रयास नहीं कर रहा है, इसलिए मुस्लमानों के लिए जंगी मुहिम का कोई जवाज़ नहीं है।

एक मेहमान Crystal Ragland कहते हैं बहुत ख़ुशी है कि मुझे इस तक़रीब में मदऊ किया गया है। मैं इस पैग़ाम को सराहता हूँ कि हुज़ूर ने समस्त मज़ाहिब के साथ अमन और मिल-जुल कर रहने की तलक़ीन की है। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि हुज़ूर यहां आए हैं।

एक मुक़ामी मेहमान अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं, यह मेरी ज़िंदगी का पहला अवसर था कि मैं किसी ऐसे प्रोग्राम में शरीक हूँ और यह तजुर्बा बहुत ही प्रभावित करने वाला रहा। हम सब का यही ईमान है कि मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं। मुझे बहुत ख़ुशी है कि हुज़ूर यहां तशरीफ़ लाए हैं। हमारा अलग अलग मज़हब है, लेकिन हम सब बुनियादी तौर पर एक ही बात कह रहे हैं। मेरे ख़्याल में अगर हम अपने ख़्यालात और अपने अक़ीदे को प्रत्येक से, अपनी कम्यूनिटी में और पड़ोसियों से बाँटना शुरू कर दें तो इस का अच्छा असर होगा। हम पहले ही फेसबुक पर इस पर बात करते हैं और यह प्रोग्राम भी ऐसा ही एक अवसर था। यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि प्रत्येक आपकी जमाअत के लिए नेक ख़ाहिशात का इज़हार करता है। मुझे वाक़ई बहुत लुतफ़ आया है। मुझे बुलाने का शुक्रिया।

एक मेहमान Lucas Anderson कहते हैं : बहुत ख़ुशी हुई कि मुझे इस तक़रीब पर आमंत्रित किया गया है। मैं आज तक इस मुस्लिम कम्यूनिटी के बारे में अज्ञान था। मैं इस पैग़ाम से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मुझे विश्वास है कि आपका मौक़िफ़ काबिल-ए-अमल और बहुत सुंदर है।

एक मेहमान Tom Berry अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहते हैं : मैं आपका और ख़लीफ़तुल मसीह का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आपका पैग़ाम, मेहमान-नवाज़ी, बाहमी मेल-जोल सब कुछ बहुत ख़ूब था। यह निसन्देह एक नेअमत है कि अक़ीदे या मज़हब से क़त-ए-नज़र एक दूसरे की भलाई के लिए अधिक से अधिक काम हो, ज़िंदगी की क़दर हो, ज़िंदगी से प्यार हो, इन्सानों का एहतेराम हो, इन्सानों से मुहब्बत हो। यह ज़ाहिर करता है कि ऐसे समाज में किसी एक फ़र्द या इदारे की इजारादारी नहीं है। सबको मिलकर काम करना है। यही ख़लीफ़ा का पैग़ाम था। यह पैग़ाम ऐसा है कि रोज़ाना सोने से क़बल और सुबह उठने के बाद दोहराना चाहिए और इसी पैग़ाम को फैलाना चाहिए। यही पैग़ाम हमें अपने बच्चों को समझाना चाहिए क्योंकि जब हम नहीं होंगे तो वह इस पैग़ाम को जारी रखें। मैं आपका फिर से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे इस प्रोग्राम में बुलाया है।

एक मेहमान Hector Amaya भी प्रोग्राम में शरीक थे। यह Sandeep Srivastava Campaign के फ़ील्ड डायरेक्टर हैं। यह अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं : यह बहुत ही शानदार प्रोग्राम था। मैं हुज़ूर से मिलकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपका पैग़ाम भी बहुत प्रभावित कण है विशेषता जब आपने आलमी अमन के बारे में बात की। निश्चित रूप में ख़लीफ़ा ने वे काम किया है जो इस मुल्क के सियासतदानों ने भी किया है।

नॉर्थ Presbyterian Church से एक मेहमान Beverly McCord कहती हैं कि : मैं पिछले आठ नौ सालों से विभिन्न तक़रीबात में शिरकत कर रही हूँ। हमारा चर्च अहमदी महिलाओं के साथ प्रोग्राम रखता था। ये बाज़-औक़ात चर्च में इकट्ठे होतीं और बाज़-औक़ात किसी अहमदी के घर में। हम कोई ऐसा विषय चुनते थे जिससे हम अपने अपने ख़्यालात की नुमाइंदगी कर सकें। इकट्ठे मिल बैठ कर बातें करते और खाना खाते। ये बहुत अच्छे प्रोग्राम थे। इसी तरह एक-बार फिर, हम एक दूसरे की इबादत-गाह में जाऐंगे और मौज़ू ए बेहस निर्धारित कर के अपने अपने मुक़द्दस सहीफ़ा की रूह से इस पर बात करेंगे। इस प्रोग्राम में शिरकत मेरे लिए ख़ुशी का बायस है। मैं हैरान हूँ कि किस तरह इस बड़े प्रोग्राम को आर्गेनाईज़ करने के लिए एक बड़ी टीम ने काम किया है, यह आपस में कितनी हम-आहंगी से काम कर रहे हैं, प्रत्येक का अपना काम है, शैडयूल है। ये बहुत दिलचस्प है। मैंने यह भी सुना है कि कुछ महिलाएं कारकुनान इस प्रोग्राम के लिए पिछले छः रातों से ठीक तरह से सौ भी नहीं पाइं और प्रत्येक ख़ुश है। कुछ ग़मगीं भी हो रही हैं कि इतना बड़ा प्रोग्राम, इतनी मेहनत और अब यह जल्दी से ख़त्म हो रहा है। मैं इन महलाओं की टीम से बहुत प्रभावित हूँ।

ख़लीफ़ा को देखकर उनकी बातें सुनकर बहुत सुकून मिला। किसी को आलमी अमन के लिए इस तरह प्रयास करते हुए नहीं देखा, यह बहुत अच्छा एहसास है। अगर लोग अपनी ख़ुदग़रज़ी, किसी पड़ोसी पर ग़लबा पाने या किसी दूसरे के इलाक़े पर क़बज़ा करने, या किसी पर ज़ुलम करने के एजंडे की बजाय इस पैग़ाम को सुनें तो दुनिया में अमन हो सकता है। काश हम अमन को फ़रोग़ देने वाली मज़ीद तक़ारीर सुन सकें और लोगों को याद दिलाते रहें कि उन्हें हमेशा अमन की पैरवी करनी चाहिए और काम करना चाहिए।

इस प्रोग्राम में Collin काओनटी पुलिस डिपार्टमैंट से LeRoy Thompson भी शरीक थे। ये कहते हैं चौधरी यह एक ख़ूबसूरत प्रोग्राम था और मैंने बहुत कुछ सीखा। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी ने हक़ीक़तन एक शानदार काम किया है। कम्यूनिटी से बाहर दीगर लोगों के लिए ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत ही अच्छा था। प्रोग्राम इंतेहाई मुनज़्ज़म और अच्छी तरह से पेश किया गया था। मेरी ख़ाहिश है कि मैं आप जैसी कम्यूनिटी से राबिता में रहूं और मज़ीद सीखूँ।

इस प्रोग्राम में Adeline Mora नामी एक लड़की भी शरीक थी। यह कहती है कि यह प्रोग्राम बहुत ही शानदार था। हुज़ूर की बातें सुनकर में बहुत ख़ुशी महसूस कर रही हूँ। जर्मनी जमाअत के सरबराह मेरे पास बैठे हुए थे और रात के खाने पर उनसे बात हुई

एक मेहमान डाक्टर हलीमुर्रहमान साहिब कहते हैं कि यह बिल्कुल नाक़ाबिल-ए-यक़ीन था। मुझे तक़रीब, इंतेज़ामात, मेहमान-नवाज़ी, पंडाल, माहौल बहुत अच्छा लगा। मुझे इस तक़रीब में मदऊ करने का शुक्रिया। मैं इस एहतेराम का मुस्तहिक़ नहीं था जो आपके लोगों ने मुझे दिया है। यह सब माहौल देखकर, आपकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई से मेरी आँखें नम हो गईं। मैं इस याद को महफ़ूज़ रखूँगा। मेरी तरफ़ से

प्रत्येक फ़र्द का दिल से शुक्रिया अदा करें। मुझे बेहतरीन इन्सानों के मध्य वक़्त गुज़ारने का अवसर मिला, हक़ीक़ी इन्सान जो कि इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात पर अमल पैरा हैं। आप सब का शुक्रिया।

एक मेहमान Mary McDermott भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। उन्होंने प्रोग्राम के लिए पार्किंग की जगह फ़राहम की थी। यह अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि ऐसी हैरत-अंगेज़ शाम के लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया। मैं पहले कभी भी ज़मीन के इस गर्द-आलूद क़ता से इतना ख़ुश नहीं हुई जितना इस प्रोग्राम के लिए देने पर हुई हूँ। यहां आकर मैं बहुत एज़ाज़ महसूस कर रही हूँ। आप सब का शुक्रिया।

Laura नामी एक महिला भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। यह कहती हैं कि इस प्रोग्राम में हमें शामिल करने का बहुत शुक्रिया। यह बहुत ही शानदार और प्यारा प्रोग्राम था और खाना बहुत ही लज़ीज़ था।

एक मेहमान Joshua Murray कहते हैं : हमें वैसा ही करना चाहिए जो कि अख़लाक़ी तौर पर अच्छा लगे। और दुनिया की मौजूदा सूरत-ए-हाल देखते हुए मुझे ऐसा लग रहा है कि यह पैग़ाम वक़्त की ज़रूरत मालूम होता है। तथा बाहमी इत्तिहाद के इस पैग़ाम को न केवल इस काओनटी बल्कि सारी दुनिया को सुनने की ज़रूरत है।

Cindy Walker नामी एक महिला भी इस प्रोग्राम में शामिल थीं। ये कहती हैं कि मैं तीन वर्ष से एक मुबल्लिग़ सिलसिला की हम-साएगी में रहती हूँ। आज की यह तक़रीब मेरे लिए बहुत प्रभावित करने वाली थी। मेरे लिए हैरत की बात थी कि हुज़ूर ने इस मौज़ू पर बात की जो मैंने कभी सोची भी न था कि एक मस्जिद के माहौल में इस बात का क्या असर होगा लेकिन मुझे अंदाज़ा हो रहा है कि हम इस कम्यूनिटी के साथ रह रहे हैं जहां इस बारे में काफ़ी ग़ौर किया जाता है। मुझे यह देखकर हैरत हुई कि (हुज़ूर अनवर) इस बात को निश्चित बनाना चाहते थे कि वे इन संदेहों का अंत करें और मैं पूरी तरह ये बातें समझ चुकी हूँ। जितना अरसा मैं यहां रही हूँ मुझे इस जमाअत से मुहब्बत, इज़्ज़त और शफ़क़त के इलावा कुछ नहीं मिला।

एक मेहमान Melissa McNeely अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि हमारे लिए गर्व की बात है कि आपने हमें आमंत्रित किया और इस के लिए हम आपके शुक्रगुज़ार हैं। हम एक ग्रुप लेकर आए थे कि जमाअत अहमदिया की नई मस्जिद के उद्घाटन की तक़रीब में शामिल हुए। मुझे अमन और बाहमी इत्तिहाद और दूसरी कमियोनीटीज़ से मेल-जोल पर आधारित पैग़ामात बहुत अच्छे लगे। हम सब इस कम्यूनिटी में मस्जिद और आप सब का और जो आप पैग़ाम लाए हैं का इस्तिक़बाल करते हैं। मैं हुज़ूर की इस बात को दाद देती हूँ कि हमें लोगों के भय को दूर करने चाहिए जो कि इस मस्जिद की तामीर से किसी के भी दिल में पैदा हुआ हो। मैं फिर इस बात का इज़हार करती हूँ कि आपके बुनियादी अक़ायद और पर अमन पैग़ाम और दुनिया की तकलीफ़ें दूर करने का पैग़ाम बहुत ही ख़ूब है।

एक मेहमान Abby Kirkendall कहती हैं कि मेरे लिए यह एक अवसर था कि मैं कोई ऐसी मज़हबी जमाअत देखूं कि जिनकी इबादत का तरीक़ा तो हमसे विभिन्न है लेकिन हमारी इक़दार एक जैसी ही हैं। मेरे लिए यह एक शानदार तजुर्बा था। यह मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र था कि मैं इतने आली मर्तबत मज़हबी राहनुमा को ऐसी ही इक़दार के बारे में बात करते हुए देख रही थी जो कि सब कमियो नीटीज़ को अपने अंदर समो लेनी चाहिऐं। यहां आने से पहले मैं हुज़ूर और आपकी जमाअत के बारे में अधिक नहीं जानती थी। यहां मुझे ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। और अक़ायद से क़त-ए-नज़र, जहां आपको ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो वहां आपको अमन और सुकून मिलता है, जो आज यहां समस्त लोगों को बिला इमतेयाज़ मज़हब-ओ-क़ौम-ओ-मिल्लत मिला और यही चीज़ है जिसकी ज़रूरत समस्त कमियो नीटीज़ को है।

एक मेहमान ख़ातून Nicole Collier वर्णन करती हैं कि मेरे लिए इस तक़रीब में शमूलियत एक शानदार तजुर्बा था कि किस तरह समस्त कम्यूनिटी यहां एक मस्जिद में ख़ुश-आमदीद कहती है और बाहमी तफ़रीक़ को ख़त्म करती है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात मेरे लिए बड़े एज़ाज़ की बात है। वैसे तो मैं अपने काम के लिहाज़ से बहुत से मोअज़्ज़िज़ीन से मिलती रहती हूँ लेकिन हुज़ूर से मुलाक़ात मेरे लिए सबसे बढ़कर थी। मैंने हुज़ूर को केवल अमन-ओ-आश्ती के बारह में बात करते सुना है। और उन्होंने लोकल कम्यूनिटी को विश्वास दिलवाया है कि यहां मुस्लमानों की मौजूदगी से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए क्योंकि मुस्लमान कम्यूनिटी अमन की रवादार है और यही है जो हम सबकी मुशतर्का इक़दार हैं। इसलिए लोकल कम्यूनिटी को बिल्कुल ख़ौफ़-ज़दा नहीं होना चाहिए। जब यहां हम पुलिस चीफ़, मेयर, कौंसल के मैंबरान, कांग्रेस के मैंबरान जैसे बड़े अमायदीन को देखते हैं तो इस से पता चलता है कि यहां इस मस्जिद का होना बड़ी अहमियत का हामिल है। मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ और इस एहसास को शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती जो मुझे हुज़ूर की मौजूदगी से यहां महसूस हो रही है। हम बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हुज़ूर ने अपने क़ीमती वक़्त में से कुछ वक़्त निकाला और यहां टेक्सास तशरीफ़ लाए और अपने ख़्यालात का इज़हार किया और इस बात का हमें विश्वास करवाया कि डरने की कोई बात नहीं, हम सब मजमूई तौर पर केवल अमन के ही ख़ाहां हैं। हम नफ़रतों को दूर करते हुए मुहब्बत के साथ समस्त इन्सानों का इस्तक़बाल करते हैं। यही असल बात है।

एक ख़ातून Dana Pressler अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि हम यहां से केवल दो मिनट की दूरी पर रहते हैं और हमारे फ़िर्क़ा की मस्जिद भी यहां से पाँच मिनट की दूरी पर है। हमारे कुछ हम-साए अहमदी मुस्लमान हैं और उनके साथ हमारे बड़े अच्छे दोस्ताना ताल्लुक़ात हैं। जब वह दूसरे लोगों को यहां मस्जिद के बारे में बता रहे थे और उनको विश्वास देहानी करवा रहे थे कि यहां मस्जिद बन रही है और आप लोगों को डरने की ज़रूरत नहीं क्योंकि हम इंतेहापसंद मुस्लमान नहीं बल्कि पुर अमन मुस्लमान हैं, तो ऐसी विश्वास देहानी बड़ी अहमियत की हामिल है।

Joshua Espraza नामी एक मेहमान ने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा आज के इस उद्घाटन की तक़रीब में मुझे और दीगर सीनीयर पादरी हज़रात को दावत दी गई है कि इस तक़रीब में शामिल हों और मज़े-दार खानों में शरीक हों और लोगों से बातचीत का अवसर मिले। मैं इस बात को बहुत सराहता हूँ कि यहां किस तरह हिक्मत के साथ अमन, इत्तिहाद और इन्साफ़ के बारे में बात की गई है। इस बात का एहसास भी हुआ कि ऐसे लोग भी हैं जिनका ताल्लुक़ विभिन्न तहज़ीब-ओ-तमद्दुन से है लेकिन वे भी हमारी ज़िंदगियों में ख़ुदा की मौजूदगी और इन्सानों में बाहमी हमदर्दी का परचार करते हैं और क्योंकि हमारे आमाल का एक दूसरे पर भी असर होता है इसलिए इस तरह मिल बैठना और खाना खाना और बातें करना बहुत ज़रूरी था।

मैं अपनी पत्नी को भी बता रहा था कि यहां मेज़बानी बहुत उम्दा थी। यहां पहुंचते ही प्रत्येक चीज़ आर्गेनाईज़ड लगी। लोगों ने मेज़बानी का हक़ अदा किया, हमारे सवालों के जवाब दिए। खाना बहुत लज़ीज़ था। मुझे यह भी एहसास हुआ कि हम क्यों ऐसी अच्छी मेज़बानी और लोगों को दावत नहीं देते। मुझे यहां आज पहली दफ़ा आने का संयोग हुआ है लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि गोया मैं अपने घर पर हूँ। मेरे लिए ये बहुत अनुभव था।

Victoria Espraza नामी एक महिला कहती हैं कि मुझे जो चीज़ यहां सबसे नुमायां लगी वह हुज़ूर का ख़िताब था कि किस तरह मज़हबी इख़तेलाफ़ और विभिन्न नज़रियात के बावजूद हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं। मेरे ख़्याल में यह ऐसी चीज़ है जिसका आजकल बैनुल मज़ाहिब डाइलाग में फ़ुक़दान नज़र आता है और किसी को इतनी हिक्मत और दानाई के साथ इस बारे में बात करते हुए देखकर बहुत ख़ुशी महसूस हुई कि अपने मज़हबी अक़ायद में मतभेदों के बावजूद, समस्त बनीनौ इन्सान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और हमें किस तरह आपस में अमन के साथ और एक दूसरे का एहसास करते हुए रहना चाहिए। आज की तक़रीब और मेज़बानी प्रत्येक लिहाज़ से बहुत उम्दा थी कि किस तरह हमारा ख़्याल रखा गया और सवालात के जवाबात दिए गए, जिससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। इस सब के लिए हम आप सब के बहुत शुक्रगुज़ार हैं।

एक ख़ातून Beverly McCord साहिबा कहती हैं कि मुझे हमेशा आलमी मज़हबी राहनुमाओं को सुनना अच्छा लगता है जो कि लोगों को नियमित अमन की ज़रूरत, बाहमी मतभेदों के तदारुक और मुहब्बत की तरफ़ बुलाते रहते हैं। मुझे हमेशा ऐसे पैग़ाम सुनकर ख़ुशी होती है। मुझे ज़ाती तौर पर इस जमाअत से कोई भय नहीं और दूसरों के ख़ौफ़ज़दा होने की भी कोई वजह समझ नहीं आती, क्योंकि यह जमाअत तो बहुत मुहब्बत करने वाली, एहसास करने वाली और हमेशा ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाली जमाअत है। अगर किसी को कोई भय हो तब भी इस जमाअत की ख़िदमत-ए-ख़लक़ और फ़लाही कामों को देखकर फ़ौरन दूर होना चाहिए।

डाक्टर Robert Hunt जो प्रकंज़ा स्कूल आफ़ थेवलोजी, सदर्न मैथोडिस्ट यूनीवर्सिटी में ग्लोबल थियोलोजीकल एजूकेशन के डायरेक्टर हैं। उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर ने जंग के ख़तरात से नबियों की तरह इंज़ार किया है। हुज़ूर ने इस्लाम

के सही अर्थ वर्णन फ़रमाए कि अल्लाह के अहकामात की तामील कर के लोगों से हुस्न-ए-सुलूक करना है। यह नहीं कि लोगों को क़तल करना है।

Brian Harvey जो कि Allen के इलाक़े में जहां मस्जिद वाक़्य है पुलिस के सरबराह हैं। उन्होंने कहा कि दस वर्ष पहले में इस इलाक़े का Police Chief बन गया था और उसी वक़्त से अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने हमारे साथ अच्छे ताल्लुक़ात क़ायम किए। हमारा गहरा ताल्लुक़ है और हम आपस में तआवुन करते हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सरबराह ने अपने मैंबरान को मुक़ामी पड़ोसियों और हुकूमत के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखने के बारे में बड़ी अच्छी तरह सिखाया है।

Vudhi Slabisak एक मुक़ामी हस्पताल में Spine Surgeon हैं। उन्होंने कहा कि मुझे हुज़ूर अनवर के पैग़ाम की जामईयत और दूसरों के लिए मुहब्बत-ओ-अमन के पैग़ाम से हैरत हुई। वे समस्त मज़ाहिब के लोगों को आपस में जोड़ने की सलाहीयत रखते हैं।

आतिफ़ ज़हीर साहिब जो John Hopkins यूनीवर्सिटी में रेडियोलोजी के प्रोफ़ैसर हैं उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर ने इस तक़रीब और मस्जिद के ज़रीया विभिन्न तबा और विभिन्न मज़ाहिब के लोगों को जमा किया। अब मुझे विश्वास है कि यह मस्जिद कम्यूनिटी को बहुत फ़ायदा देगी और मुक़ामी बाशिंदों को अमन और मुहब्बत की चादर में लपेटेगी। मुझे ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करने का शरफ़ हासिल हुआ और उन्होंने इंतेहाई मुफ़ीद बातें वर्णन फ़रमाई थीं। उन्होंने न केवल मुक़ामी मसायल बल्कि दुनियावी मसायल का वर्णन फ़रमाया था

(शेष आगे)

रिपोर्ट माननीय अब्दुल माजिद ताहिर साहिब
(ऐडीशनल वकीलुल् तबशीर् लंदन, यू.के)
(उद्धृत अख़बार बदर उर्दू 24 नवंबर 2022)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान
27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और विल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें (1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (1 0 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
01872-501130 दफ़्तर
09682587713,09682627592
E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 25 April 2024 Issue No. 17

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें , नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
01872-501130 दफ़्तर , 09682587713,09682627592
E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad